Q.13. कान्ट का समीक्षावाद की व्याख्या करें।

Ans :→ ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त में कान्ट ने समीक्षावाद का प्रतिपादन किया है। कान्ट के समय में ज्ञान सम्बन्धी दो सिद्धान्त प्रचलित थे।

(i) बुद्धिवाद और (ii) अनुभववाद।

बुद्धिवाद के प्रवर्तक लाइबनिट्ज दार्शनिक ने ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है। बुद्धि जन्मजात प्रत्ययों का विश्लेषण कर ज्ञान की सृष्टि करती है। लॉक ह्यूम का अनुभववाद के अनुसार ज्ञान का कोई अंश जन्मजात नहीं है, क्योंकि अनुभववाद द्वारा ही समस्त ज्ञान प्राप्त होता है। बुद्धिवादी के अनुसार ज्ञान सार्वभौम तथा अनिवार्य है। लेकिन अनुभववाद के अनुसार ज्ञान में केवल सम्भावना होती है। कांट दार्शनिक का तर्क है कि लाइबनिट्ज दार्शनिक ज्ञान की सार्वभौमिकता को मुख्य बतलाया है और ह्यूम दार्शनिक अनुभववाद के द्वारा ज्ञान की यथार्थता को सिद्ध करता है। इनदोनों के पक्षों को कान्ट परीक्षा करके आंशिक रूप में सत्यता का बोध करते हैं, और आंशिक रूप में दोषपूर्ण भी व्यवहार में लाते हैं। एक तरफ कान्ट अपूर्ण और एकांगी के रूप में सिद्ध करते हैं तो दूसरे तरफ आंशिक सत्यता का। कान्ट का कहना है कि बुद्धिवाद के द्वारा मन में जन्मजात प्रत्यय होता है। साथ ही ज्ञान के आधार पर बुद्धि का विश्लेषण कर ज्ञान की सृष्टि करता है, जिसमें दो कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाता है।

(i) यदि बुद्धि अपने अन्दर से ज्ञान की सृष्टि करती है तो वह बाह्य जगत के अनुरूप कैसे हो सकता है?

(ii) ऐसे ज्ञान में नवीनता का आभाव होता है क्योंकि सहजप्रत्ययों के आधार पर ही सभी ज्ञान रूपी निष्कर्ष निकलते हैं।

बुद्धिवाद के द्वारा लाइबनिट्ज दार्शनिक का यह कहना सत्य है कि

Scanned with CamScanner

गणित को अनुभव निरपेक्ष माना है। जबकि गणित के सत्यों को स्थापित करने के लिए अनुभव का होना आवश्यक है। इस प्रकार लाइबनिट्ज का बुद्धिवाद दोषपूर्ण है।

कान्ट ने ह्यूम के अनुभववाद के बारे में त्रुटियाँ पेश करते हुए कहते है कि ज्ञान की उत्पत्ति केवल अनुभव से ही होती है। यह उचित प्रतित नही होता है, क्योंकि इस ज्ञान के सार्वभौमिकता का अभाव बतलाया जाता है। क्योंकि ज्ञान की उत्पत्ति के सिद्धान्त में सार्वभौमिकता और अनिवार्यता का होना आवश्यक है क्योंकि हमारा अनुभव वर्तमान का होता है, कुछ का होता है। अतः अनुभव ज्ञान प्राप्ति का साधन नही हो सकता। अनुभववादियों का यह तर्क करना कि वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान वास्तविक ज्ञान है। इन दोनों दार्शनिक लाइबनित्ज और डेविड ह्यूम के विचारों को कान्ट ने अपने सार्वगर्भित शब्दों में समीक्षा किया है। कान्ट के शब्दों में "यथार्थ ज्ञान में बुद्धि और अनुभव का समन्वित फल है। बुद्धि के बिना अनुभव अन्धा है और अनुभव के बिना बुद्धि रिक्त है।" दूसरे शब्दों में ज्ञान की सामग्री अनुभव से और उसका आकार बुद्धि से मिलता है। आकार के बिना सामग्रियाँ अव्यवस्थित और अस्त-व्यस्त है क्योंकि बुद्धि के आकार उन्हें व्यवस्थित करते है।

("Sensibility without understanding is blind and understanding without sensibility is empty.") कान्ट का दर्शन समीक्षावादी (Critical) है। समीक्षावाद का मोह न अनुभववाद से ... है। इन दोनों भ्रमों से परे है। कान्ट का ... (transcendental) दर्शन को

स्थापना करता है। इसलिए समीक्षावाद कहीं होने की अपेक्षा देखने पद्धति है क्योंकि कान्ट यह समन्वयवादी दर्शन लाइबनित्ज के बुद्धिवाद और डेविड ह्यूम के अनुभववाद के दोषों के परिहार का अपना अपना ढंग पेश करता है। कान्ट ने ज्ञान को सार्वभौमिक, अनिवार्य और नवीन कहा है क्योंकि ज्ञान की अधिकतर शाखाएँ भौतिक विज्ञान और गणित विज्ञान मे पाया जाता है क्योंकि गणित शुद्ध रूप से बुद्धि पर आधारित है।

ज्ञान सिद्धान्त के रूप मे कान्ट का कहना है कि ज्ञान के उत्पत्ति सिद्धान्त मे सार्वभौमिकता और अनिवार्यता का गुण साथ ही साथ नवीनता का होना आवश्यक है। वही ज्ञान वास्तविक ज्ञान है जिसमें हमेशा सत्यता का गुण और वस्तुओं के विषय मे नवीनता का गुण व सूचना देता है जिस वाक्य से नवीन ज्ञान मिलता है उसे सांश्लेषिक वाक्य (Synthetic Judgment) कहते है। जैसे - अग्नि - उष्णता का कारण है क्योंकि उनका विधेय उद्देश्य मे निहित होता है उसके विषय मे नई सूचना देता है। इसलिए ऐसे वाक्यों की स्थापना उद्देश्य के बौद्धिक विश्लेषण से नही बल्कि वस्तु जगत के अनुभव से उसके वास्तविक निरीक्षण से होता है। कान्ट का यह कहना है कि अग्नि से उष्णता उत्पन्न होती है। यह तभी सार्थक होता है जब हम उसे सही माने में परीक्षा करके अनुभव का रूप प्राप्त करते है। इस उदाहरण के द्वारा हम स्पष्ट कर सकते है कि अग्नि में उष्णता का होना सार्वभौमिक और अनिवार्यता गुण पाया जाता है। इसलिए कान्ट के अनुसार ज्ञान प्रागनुभविक संश्लेषिक वाक्यों को स्वीकार करना ही ज्ञान की असली पहचान होती है क्योंकि वाक्यों के विश्लेषिक वाक्य भी होता है। जिसमे नवीन ज्ञान की प्राप्ति नही होती है। जैसे - त्रिभुज मे तीन भुजाएं रेखाएं होती है इसका विधेय

उद्देश्य की गुणवाचकता (connatation) का विश्लेषण करना होता है। कोई नवीन (नया) ज्ञान की प्राप्ति नहीं करता। इसलिए इसे वैश्लेषिक वाक्य (analyte col judgment) कहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि वैश्लेषिक वाक्य ही ज्ञान सार्वभौमिकता और अनिवार्यता का गुण हो सकता है।

आलोचना :→ पाश्चात्य दर्शन के जाने माने जर्मन प्रत्ययवाद कान्ट दार्शनिक अठारहवीं शताब्दी में बुद्धिवाद और अनुभववाद के विरुद्ध अपने दर्शन की रचना की थी। कान्ट दार्शनिक जॉन लॉक, जार्ज बर्कले और डेविड ह्यूम दार्शनिक चरम विकासोन्मुख प्रगति में दोनों मतों के आंशिक रूप में माना है। कान्ट अपने दार्शनिक को रुढ़िवाद की संज्ञा दिया है तथा बिना ज्ञान की परीक्षा किये भी तत्वों के विषय में विचारना आरम्भ कर देता है। कान्ट का कहना है कि विश्व तथा ईश्वर, आत्मा तथा अनुभव परे विषयों आलोचना करने के पहले मानसिक शक्तियों को तौल लेना आवश्यक है। इन शक्ति के द्वारा इन प्रश्नों की मिमांसा होती है।

बुद्धिवाद के समर्थक रेने देकार्त, स्पीनोजा तथा लाइबनिट्ज दार्शनिक ने बतलाया है कि वास्तविक ज्ञान सार्वभौम, अनिवार्य तथा स्वयंसिद्ध स्वयंशील होता है। ऐसा ज्ञान अनुभव के द्वारा नहीं प्राप्त हो सकता क्योंकि अनुभव सार्वभौम तथा अनिवार्य नहीं हो सकता। इसलिए ज्ञान बुद्धि प्रशुद्ध है।

दूसरी तरफ अनुभववाद के समर्थक जॉन लॉक, जार्ज बर्कले तथा डेविड ह्यूम ने ज्ञान को सीमित दायरे में बताया है। और ज्ञान के साधन को अनुभव के प्राथमिकता दिया है। डेविड ह्यूम के भौतिक शास्त्र में सार्वभौम में ज्ञान अनिवार्य संभव नहीं है, क्योंकि तत्वज्ञान में तत्वों की अनुभूति नहीं होती है अतः तत्वज्ञान भी संभव नहीं हो सकती है। बुद्धिवाद को समीक्षा करते हुए कान्ट

दार्शनिक का कहना है कि वास्तविक ज्ञान सार्वभौम तथा अनिवार्य होता है। इस प्रकार का ज्ञान गणित शास्त्र तथा भौतिक शास्त्र से मिलता है।

अनुभववाद के समीक्षा करते हुए कान्ट दार्शनिक का कहना है कि ज्ञान का आरम्भ अनुभव से होता है। यथार्थता सत्य है। लेकिन डेविड ह्यूम दार्शनिक को सार्वभौम ज्ञान संभव नहीं है क्योंकि डेविड ह्यूम दार्शनिक का सिद्धान्त है कि अनुभवो द्वारा निश्चित सत्यों का ज्ञान नहीं हो सकता है। ज्ञान केवल सम्भावना मात्र है। कोई ज्ञान निश्चित नहीं है। कान्ट का समीक्षावाद, अनुभववाद तथा बुद्धिवाद में समन्वय स्थापित करता है। कान्ट के दर्शन को समीक्षात्मक दर्शन के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि कान्ट ने समीक्षात्मक दर्शन में निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है। वस्तुतः कान्ट सर्वप्रथम बुद्धिवादी का सहारा लिए लेकिन काफी खोजबिन के बाद। कान्ट ने इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि बुद्धिवाद का अन्त अन्धविश्वास (Dogmatism) है। इसके बाद कान्ट अनुभववादी का सहारा लिया लेकिन काफी निरीक्षण के बाद इस बिन्दु पर पाया है कि अनुभववाद का अन्त सन्देहवाद है। अतः दोनों दोषपूर्ण है। फिर भी इन दोनों में गुण भी है। कान्ट दार्शनिक ने इन दोनों का समीक्षण करके इनके गुणों का अवलोकन किया है। इसलिए कान्ट को समीक्षावाद के नाम से जाना जाता है।

अ इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कान्ट के ज्ञान सिद्धान्त के दो पक्ष है - (i) खण्डन तथा (ii) मण्डन।

कान्ट ने अपनी समीक्षा में बतलाया है कि अनुभव ही ज्ञान का आरम्भ है। यह नित्य, नवीन ज्ञान को प्रमाणिक मानता है। साथ ही बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों ही एकांगी

(6)

कान्ट के अनुसार बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों का विधि पक्ष तो ठीक है परन्तु निषेध-पक्ष ठीक या उचित नहीं (They are Justified in What they affirm but Wrong in What they deny) बुद्धिवाद और अनुभववाद का विश्लेषण करते हुए कान्ट यह निष्कर्ष पर पहुँचते है कि ज्ञान के दो अंग होते है - (i) उपकरण (Matter) तथा (ii) स्वरूप (Form)। ज्ञान का उपकरण हमे अनुभव से प्राप्त होता है, परन्तु ज्ञान का स्वरूप बुद्धि से प्राप्त होता है। उदाहरण स्वरूप- यह मानाकि यदि के उपकरण मृत्तिका है तथा स्वरूप साँचा है। हम मृत्तिका को साँचे में डालकर ही विभिन्न प्रकार की आकृतियों का निर्माण करते है। तथा एक रूप दे देना ज्ञान सामग्री तथा स्वरूप दोनों का सम्मिश्रण है। यहाँ पर कान्ट का कहना है कि बुद्धिवादियों का कहना है कि सत्य है कि कार्य व कारण, द्रव्य इत्यादि जन्मजात प्रत्ययों के बिना ज्ञान सम्भव नहीं तथा अनुभववादियो का कहना भी सत्य है कि बिना संवेदनाओं के सामग्री का ज्ञान सम्भव नहीं। कान्ट ने तीन महत्वपूर्ण कृतियों की व्याख्या की है। (i) शुद्ध बुद्धि परीक्षा (Critique of Pure Reason) (ii) व्यावहारिक बुद्धि परीक्षा (Critique of Practical Reason) (iii) निर्णय की परीक्षा (Critique of Judgement). इन तीनों ग्रन्थों में सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ शुद्ध बुद्धि परीक्षा है। इस ग्रन्थ में कान्ट ने ज्ञान के स्रोत स्वरूप तथा सीमा पर विचार किया है। व्यावहारिक बुद्धि परीक्षा में कान्ट ने नैतिक प्रश्नों पर विचार किया है। निर्णय परीक्षा में कान्ट ने पारमार्थिक विषयों पर विचार किया है। पुन: शुद्ध बुद्धि परीक्षा के दो भाग है, जिन्हे संवेदन परीक्षा (Transcendental Aesthetic) तथा बौद्धिक प्रत्यय परीक्षा (Transcendental Logic) कहते है। पुन: बौद्धिक प्रत्यय परीक्षा के भी दो भाग है, जिन्हे पदार्थ परीक्षा (Transcendental Analytic) तथा पक्ष परीक्षा (Transcendental Dialectic) कहते है।

इस प्रकार कान्ट ने ज्ञान के स्रोत स्वरूप और सीमा पर विचार करते हुए ज्ञान के स्रोत में उन्होंने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों का समन्वय स्थापित किया है जिसको उन्हें समीक्षावाद के नाम से जाना जाता है।

कान्ट के दर्शन में मूल्यांकन:→ कान्ट के दर्शन की समीक्षा का मूल्यांकन पाश्चात्य दर्शन में कान्ट का समीक्षावाद का मूल्यांकन करते हुए बुद्धिवाद और अनुभववाद दार्शनिकों का तर्क है कि कान्ट यह बुद्धिवाद और अनुभववाद में ज्ञान का आभाव पाया जाता है यह सही नहीं है क्योंकि मनुष्य वासनाओं के दमन और उसकी बुद्धि पर उत्कर्ष देते हैं। जिससे मनोवैज्ञानिक दोषपूर्ण उत्पन्न होता है। साथ ही कान्ट के सिद्धान्त में कठोरता पाया ~~जाता~~ है। जाना दोषपूर्ण होता है। क्योंकि कोई भी कार्य स्नेह, प्रेम, सहानुभूति इत्यादि से ही प्रेरित किया जाता है। लेकिन कान्ट का कोई भी कार्य भावना या वासना से प्रेरित होकर कर्म होता है वो अनैतिक है। कान्ट का मत विरोधवाद है क्योंकि इच्छा या वासना को अनैतिक है या दूषित बताकर दमन करना आवश्यक कहा गया है। इसलिए इनके सिद्धान्त में दोष उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि अबतक व्यक्ति सांसारिक जीव वह इच्छाओं और वासनाओं से अपने को मुक्त नहीं कर सकता है।

कान्ट के सिद्धान्तों में विरोधाभास पाया जाता है। उसके अनुसार नैतिकता का प्रगति के लिए वासनाओं के दमन आवश्यक है क्योंकि बुद्धि और वासना संघर्ष के कारण ही नैतिकता की प्रगति पर निर्भर है लेकिन यदि वासनाओं को निर्गुण कर दिया जाय तो बुद्धि के साथ किसका संघर्ष होगा है। कान्ट के लिए यथार्थ ज्ञान सार्वभौम, अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। और ऐसा ज्ञान गणित शास्त्र, भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में वस्तुतः विद्यमान है। इस चीज को आधुनिक युग के वैज्ञानिकों ने कान्ट की इस युक्ति को गलत बताया है क्योंकि

... ना कि साधन। इसलिए ... को सही ... नहीं
होता है।

काण्ट पाश्चात्य दर्शन में महान
आलोचनावाद के नाम से जाने जाते हैं। जर्मनी के विख्यात दार्शनिक
काण्ट के समान पाश्चात्य जगत में इतना बड़ा विचारक
कोई नहीं हुआ था। ये जर्मनी के ही बल्कि विश्व के
विख्यात में विद्वान माने जाते हैं। दर्शनशास्त्र के जिस पक्ष
में भी काण्ट ने विचार प्रकट किया है वह अद्वितीय और
अभूतपूर्व है। ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त में काण्ट ज्ञान के
स्रोत, स्वरूप और सीमा पर विचार किया है। ज्ञान के
स्रोत में उन्होंने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों ... का
विचार का समन्वय किया है। इसलिए उन्होंने दर्शन के
क्षेत्र में समीक्षावाद के नाम से जाने जाते हैं। बुद्धिवाद
और अनुभववाद का विश्लेषण करके उन्होंने ~~[illegible]~~ ...
कर दी है। ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में प्रतीत और ...
में भेद का समन्वय किया है क्योंकि उनका कहना है ...
स्वलक्षण या परमार्थ का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। ये
बुद्धि की क्षमता का सूचक है। ज्ञान की कुछ व्यावहारिक
बतलाकर काण्ट ने बुद्धि की सीमा का निर्धारण किया
है। तत्वमीमांसा के सिद्धान्त के सम्बन्ध में काण्ट ने अनेक
नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। साथ ही साथ नैतिकता
4 की खोज में काण्ट की सबसे बड़ी देन उनका निरपेक्ष आदेश
है। यह कर्तव्य के लिए कर्तव्य का ~~आदेश~~ सिद्धान्त। भगवद् गीता के
निष्काम कर्मयोग के अत्यन्त निकट ~~की सिद्धान्त~~, साथ ही साथ नैतिकता का
प्रतिपादन करने में काण्ट भारतीय मनीषियों और महात्माओं के
निकट रहकर तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा को आगे
अग्रसारित किया है। इसलिए काण्ट समीक्षावादी होते हुए
भी अन्य दार्शनिक से भिन्न होते हुए भी महान्

इस प्रकार कान्ट ने ज्ञान के स्रोत स्व... (02)
विचार
दोनों (01)

विकासवादी, मनोवैज्ञानिक, समीक्षावादी, [illegible]
इत्यादि का यदि नाम भी दिया जाय तो कान्ट
के लिए अतिश्योक्ति नहीं है।

अतः कान्ट बुद्धिवाद
और अनुभववाद का आलोचना करते हुए भी
ज्ञान के क्षेत्र में समीक्षावाद के नाम से जाने
विख्यात जाते हैं।

क्योंकि

The End

Scanned with CamScanner